कृषि विकास एवं तकनीकी परिवर्तन

डॉ0 सुशील कुमार सिंह

कृषि विकास की खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा ये अनुमान लगाये जाते है कि भारत अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज का उत्पादन करता है, किन्तु यह अनुमान सहीं नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि भारत में खाद्यान्न माँग उसके वर्तमान मूल्यों और जनसंख्या के एक बड़े वर्ग की निम्न आय के कारण कम है। ''खाद्य एवं कृषि संगठन'' के एक अनुमान के अनुसार भारत की 20 प्रतिशत जनसंख्या को उचित पोषाहार नहीं मिलता है, अतः यदि सम्पूर्ण जनसंख्या को उचित पोषाहार दिया जाये तो यह अनुमानित खाद्यान्न अधिशेष उपलब्ध नहीं होगा। उल्लेखनीय है कि कृषि विकास का कृष्ण पक्ष यह है कि अलग–अलग क्षेत्रों, फसलों और कृषक समुदाय के विभिन्न वर्गों का असमान विकास तथा प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हुआ है। पूँजी की अपर्याप्तता, अवस्थापना सुविधाओं का अभाव तथा कृषि उत्पादन की बिक्री में बाधायें, प्रतिकूल मूल्य व्यवस्था तथा निम्न मूल्य संवर्द्धन के कारण कृषि कार्य अलाभकारी प्रतीत हो रहा है। उल्लेखनीय है कि जनसंख्या एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के कारण खाद्यान्न की मांग बढ़ रही है, किन्तु खाद्यान्न फसल के अन्तर्गत क्षेत्रफल में तथा खाद्यान्न उत्पादकता में वृद्धि सम्भव नहीं हो पा रही है। वैश्वीकरण के दौर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कृषि की स्थापना के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार का तकनीकी परिवर्तन लाना सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है। भारतवर्ष चूँकि कृषि प्रधान देश है, जिसकी कृषि की व्यवस्था पुरानी तकनीक पर आधारित है।